महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

हिंदी विश्वविद्यालय में समाज विज्ञान में शोध प्रविधि पर कार्यशाला

सभ्यता आगे और संस्कृति पीछे जा रही है -डॉ. विजय धारुरकर

वर्धा दि. 14 जनवरी 2015: वर्तमान समय में हम विकास की पश्चिम अवधारणा के सिद्धांत को अधिक महत्व दे रहे हैं। इससे हमारी सभ्यता तो आगे जा रही है परंतु संस्कृति पीछे छूटती जा रही है। उक्त बातें डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद में लिबरल आर्टस विभाग के निदेशक तथा जनसंचार विषय के विद्वान डॉ. विजय धारुरकर ने की। वे महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में समाज विज्ञान में शोध प्रविधि पर आयोजित कार्यशाला में बुधवार को संचार माध्यम एवं शोध प्रविधि विषय पर बोल रहे थे।

डॉ. धारुरकर ने अपने व्याख्यान में संचार में चार प्रकार के अनुसंधान की बात की। उन्होंने बताया कि माध्यम, समाज, संस्कृति और संदेश केंद्रित अध्ययन के द्वारा हम मीडिया को लेकर अनुसंधान कर सकते हैं। इसके लिए अपनायी जाने वाली अनेक प्रविधियों का उल्लेख उन्होंने किया। उन्होंने संचार माध्यमों के विद्वान डेनिस मेकविल, विलबुर स्रॅम, श्रीनिवास मेलकोटे आदि के सिद्धांतों का संदर्भ अपने व्याख्यान में लिया। उन्होंने गावों की तरफ मीडिया की दृष्टि क्या है इस बात पर कहा कि आजादी से पहले गावों और कस्बों से संबंधित समाचारों को मीडिया में एक प्रतिशत से भी कम जगह मिलती थी, उसे आज पांच प्रतिशत तक का स्थान मिल रहा है।

इसी संदर्भ में उन्होंने कहा कि संचार माध्यमों में संख्यात्मक परिवर्तन तो आए हैं परंतु हमें सोचाना होगा कि संख्यात्मक वृद्धि को गुणात्मक विकास में कैसे परिवर्तित करना चाहिए। उन्होंने कहा कि संचार माध्यमों को ग्लोबलाईजेशन नहीं हुयमनाईजेशन पर ध्यान देना चाहिए ताकि 'गांधी जी के अनुसार जो चाहे वह जरूर दो परंतु उससे आगे बढ़कर भी दो' इस सिद्धांत का पालन हो सके। उन्होंने शोधार्थियों से अपील की कि समाज को बदलने की कोशिश के लिए अध्ययन ही असली अध्ययन होना चाहिए। कार्यक्रम का संचालन मिथिलेश ने किया। व्याख्यान के दौरान महात्मा गांधी फ्यूजी गुरुजी शांति अध्ययन केंद्र के निदेशक प्रो. मनोज कुमार प्रमुखता से उपस्थित थे।

हिंदी विद्यापीठात समाज विज्ञानात शोध पद्धती वर कार्यशाळा

सभ्यता पुढे तर संस्कृती मागे जात आहे - डॉ. विजय धारुरकर

वर्धा दि. 14 जानेवारी 2015: वर्तमान काळात आम्ही विकासाच्या पाश्चिमात्य प्रतिमानाच्या सिद्धांतांना अधिक महत्व देत आहोत, यामुळे सभ्यता पुढे तर संस्कृती मागे जात आहे. असे मत डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विद्यापीठ औरंगाबाद येथील लिबरल आर्टस विभागाचे निदेशक आणि जनसंवाद विषयाचे गाढे अभ्यासक डॉ. विजय धारुरकर यांनी मांडले. ते महात्मा गांधी आंतरराष्ट्रीय हिंदी विद्यापीठात समाजशास्त्रात शोध पद्धतीवर आयोजित कार्यशाळेत

बुधवारी संचार माध्यम आणि शोध पद्धती या विषयावर बोलत होते.

डॉ. धारुरकर यांनी संचार माध्यमांमध्ये चार प्रकारच्या शोध पद्धतींची चर्चा आपल्या व्याख्यानात केली. ते म्हणाले माध्यम, समाज, संस्कृती आणि संदेश केंद्रित अध्ययनाच्या माध्यमातून मीडियामध्ये शोध करता येतो. प्रसार माध्यमांची संख्यात्मक वृद्धी यावर ते म्हणाले की स्वातंत्र्यापूर्वी गावांशी संबंधित बातम्यांना एक टक्के पेक्षाही कमी जागा मिळत असे आज ते प्रमाण 5 टक्यांपर्यंत गेले आहे. अर्थात, मधल्या काळात प्रसार माध्यमांमध्ये संख्यात्मक वाढ मोठया प्रमाणावर झाली असली तरी ती वाढ गुणात्मक विकासाकडे परिवर्तीत झाली की नाही याचा शोध घेणे गरजेचे आहे. भारताच्या दृष्टीने माध्यमांनी ग्लोबलाईजेशन ऐवजी हु यमनाईजेशन वर अधिक लक्ष द्यावे असेही ते म्हणाले. कार्यक्रमाचे संचालन मिथिलेश यांनी केले. यावेळी महात्मा गांधी फ्यूजी गुरुजी शांती अध्ययन केंद्राचे निदेशक प्रो. मनोज कुमार, डॉ. शंभू जोशी, बी. एस. मिरगे उपस्थित होते.